जॉन मुइर

जिन्होंने पहाड़ों को खुश किया

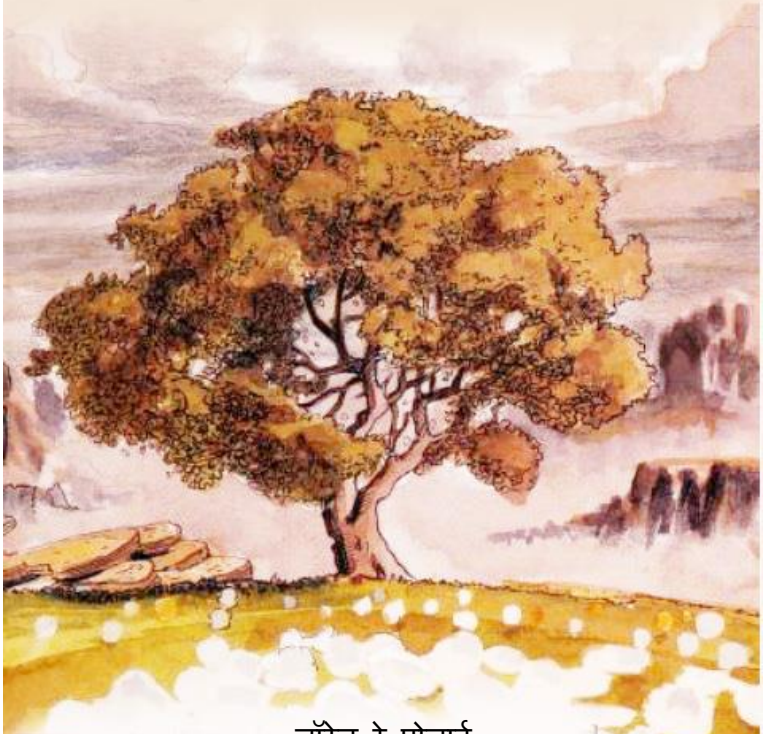

लॉरेन रे पोलार्ड

चित्र: विल स्वीनी

जॉन मुइर

जिन्होंने पहाड़ों को खुश किया

लॉरेन रे पोलार्ड

चित्र: विल स्वीनी

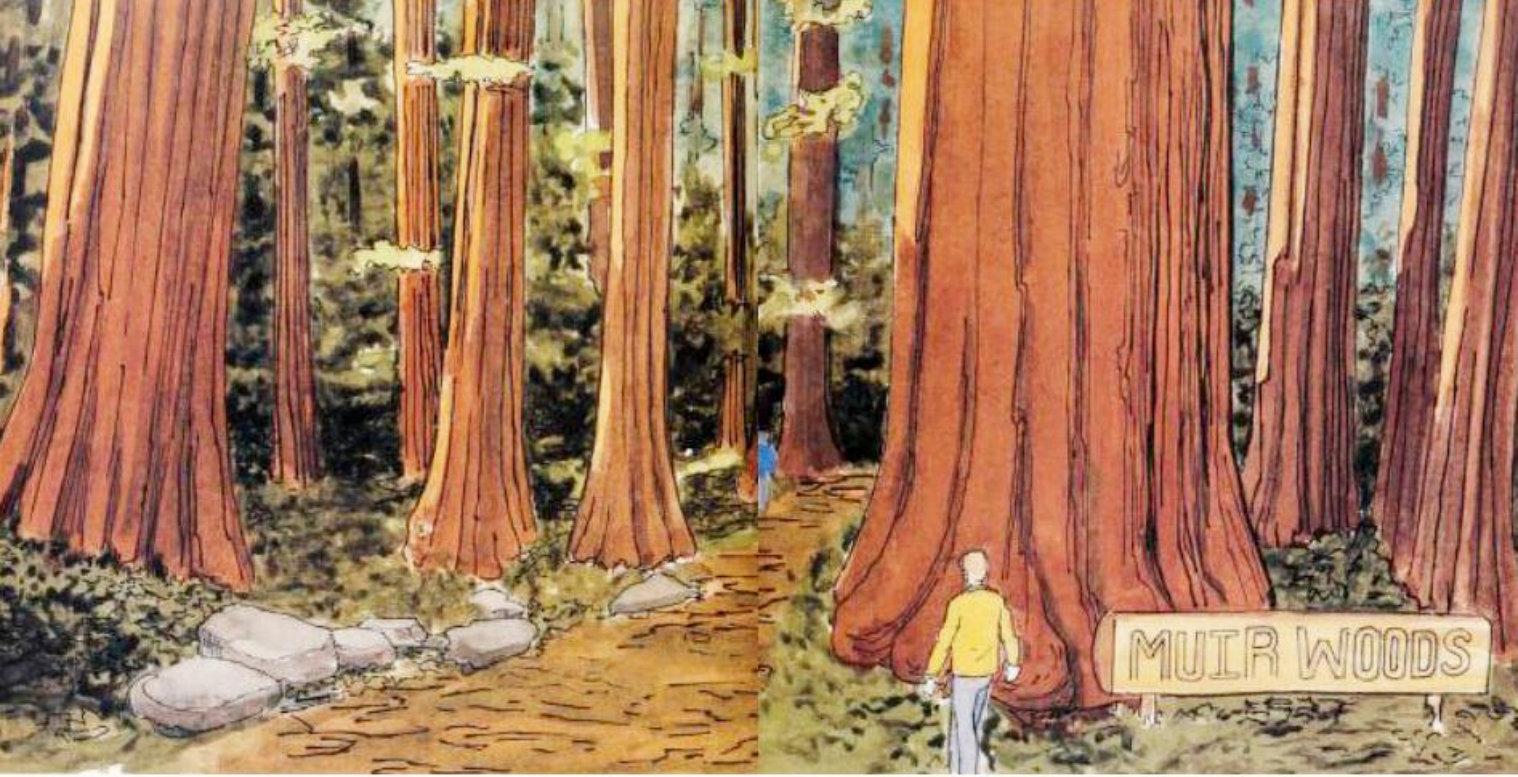

क्या आप कभी किसी राष्ट्रीय उद्यान में गए हैं? क्या आपने ऊंचे, पुराने पेड़ों को देखा है? क्या आपने कभी फूलों से भरे मैदान देखे हैं? यदि हां, तो आप उसके लिए जॉन मुइर को धन्यवाद दे सकते हैं.

जॉन मुइर का जन्म स्कॉटलैंड के एक छोटे से गांव में हुआ था. जब जॉन 11 साल के थे, तब उनका परिवार अमेरिका चला गया.

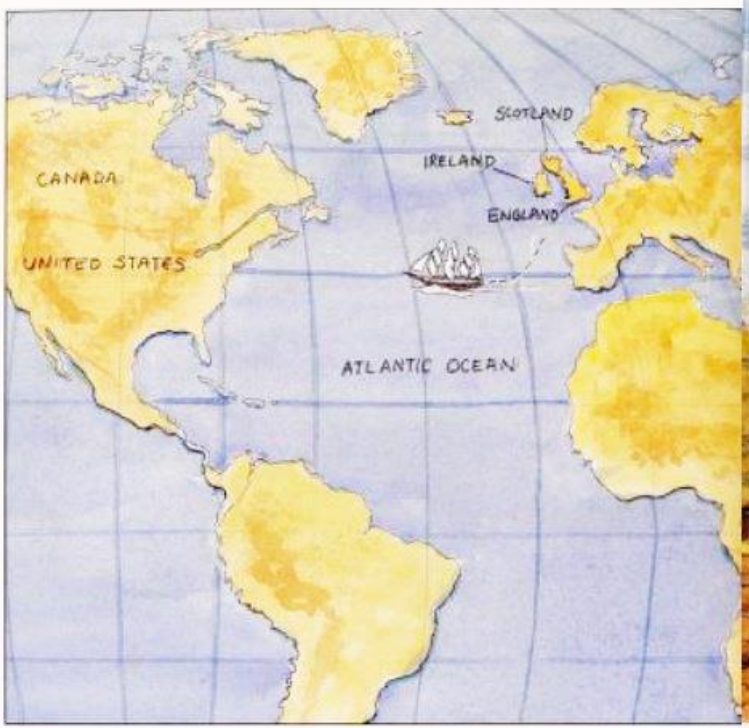

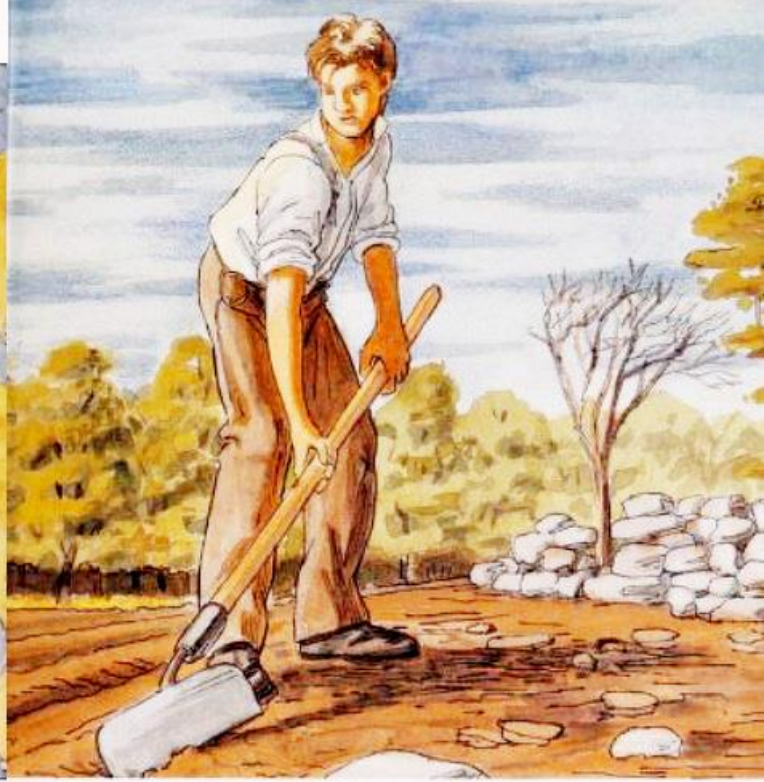

वर्ष 1849 था. उस समय समुद्र पार जाने का एकमात्र रास्ता नाव से था. जॉन और उनका परिवार नाव से अमेरिका गए. यात्रा लंबी थी. जब मुइर परिवार उतरा, तो वे विस्कॉन्सिन में रहने चले गए.

परिवार एक फार्म पर रहता था. मिस्टर मुइर जी-तोड़ काम और अधिक-से-अधिक मेहनत में विश्वास करते थे. जॉन ने लंबे समय तक खेतों में काम किया. उसने जमीन से पेड़ उखाड़े. उसने मिट्टी जोती और बीज बोए.

जॉन को बाहर खेलना पसंद था. जब उसका काम ख़त्म हो जाता तो फिर वो जंगलों में घूमता था. वो खेतों में दौड़ता था. उसे ठंडी झील में तैरना पसंद था. जॉन ने अपने आसपास के पौधों और जानवरों का भी अध्ययन किया.

जब वो बड़ा हुआ, तब जॉन मुइर इंडियानापोलिस, इंडियाना चला गया. वो वहां एक फैक्ट्री में काम करने लगा. एक दिन उसका एक्सीडेंट हो गया. जॉन एक महीने तक कुछ भी देख नहीं सका. वो अपने प्रिय जानवरों और पौधों को भी नहीं देख पाया. शायद इसीलिए जॉन ने प्रकृति को अपना जीवन बनाया.

जॉन दुनिया देखना चाहता था. वो इंडियानापोलिस से मैक्सिको की खाड़ी तक 1,000 मील दक्षिण की ओर गया. वहां उसने पनामा देश को घोड़े से पार किया. फिर वो कैलिफोर्निया के तट पर पहुंचा.

जॉन, सैन फ्रांसिस्को में उतरा. लेकिन वो वहां नहीं रहा. वहां बहुत शोर था. वहाँ बहुत ज़्यादा लोग थे. वो फूलों के मैदानों में से होते हुए गांव की ओर चल पड़ा. अंत में, वो पहाड़ों पर पहुंचा.

जॉन मुइर को वो अब तक के सबसे खूबसूरत पहाड़ लगे. पहाड़ ऊंचे थे और उनकी चोटियां बर्फ से ढंकी थीं.

जॉन मुइर ने पहाड़ों में अपना घर बनाया. वो बलवान था और उसे खुद पर यकीन था. उसे वहां रहना पसंद आया. एक बार उसने खुद को एक पेड़ से बांध लिया. वो अपने चेहरे पर हवा और बारिश को महसूस करना चाहता था.

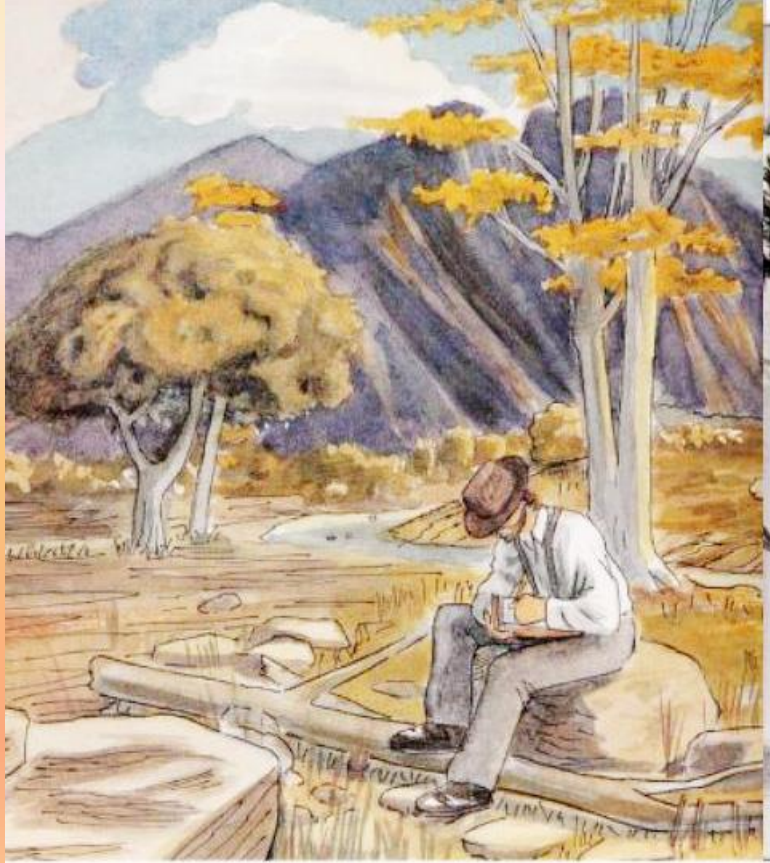

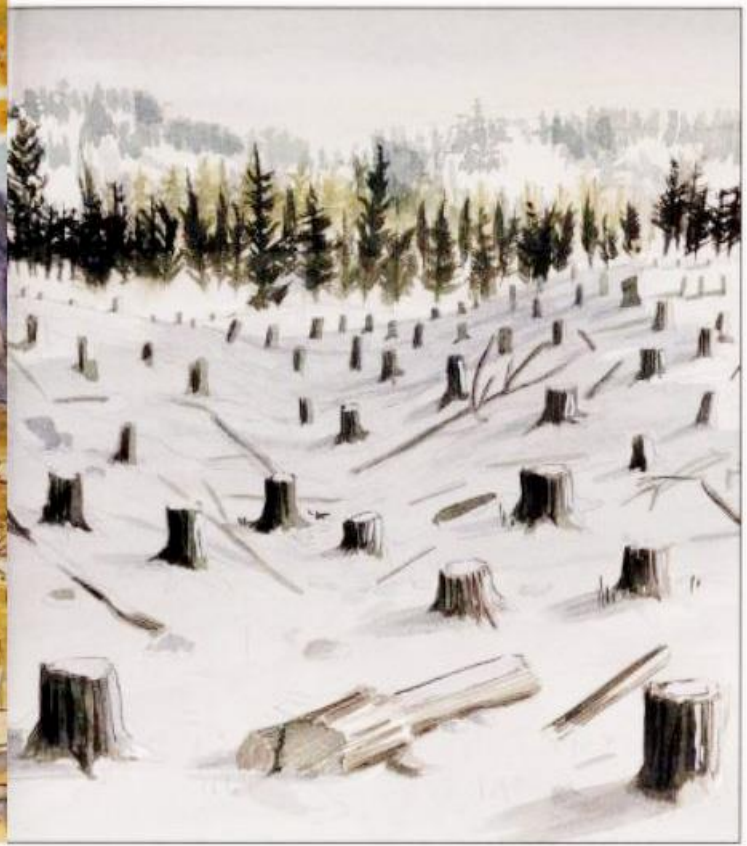

जॉन मुइर ने उन खूबसूरत जगहों के बारे में लिखना शुरू किया जिन्हें उसने देखा था. बहुत से लोगों ने जॉन की कहानियाँ पढ़ीं. कई लोग उससे मिलने आए.

जॉन ने कहा कि पहाड़ बदल रहे थे. उसने कहा कि लोग बहुत सारे पेड़ काट रहे थे.

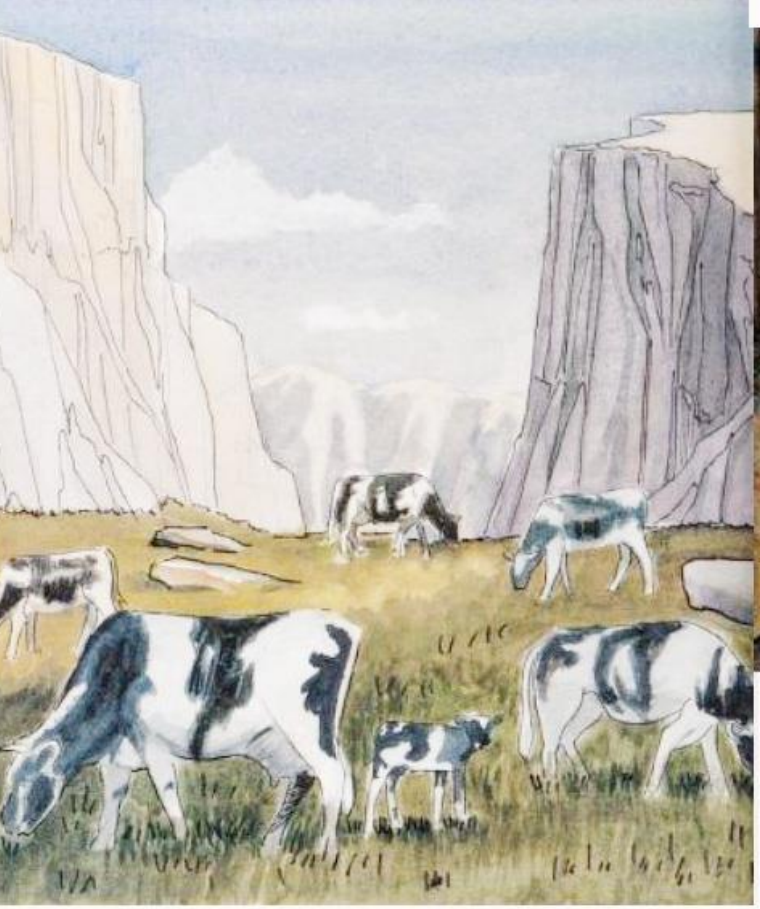

भेड़, गाय और अन्य मवेशी बहुत से पौधे खा गए थे. जॉन को वो देखकर डर लगा. उसे पता था था कि इन चीजों से पहाड़ों को नुकसान होगा.

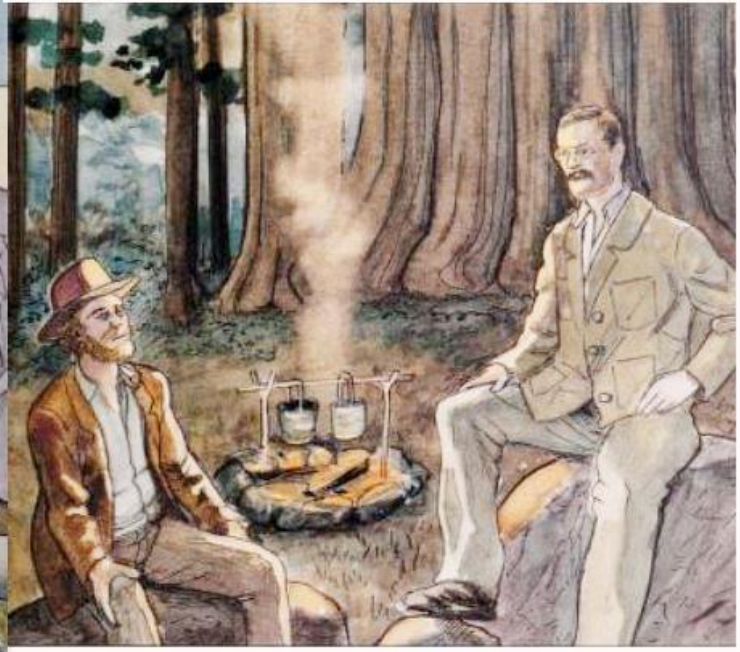

राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट ने जॉन की किताबें पढ़ीं. 1903 में वे जॉन से मिलने गए. दोनों लोग खुले में, तारों के नीचे बैठे. उन्होंने इन खूबसूरत जगहों को कैसे बचाया जाए, उसके बारे में चर्चा की. फिर उन्होंने वहां पर पार्क बनाने का फैसला किया. वो स्थान आज भी पार्क हैं.

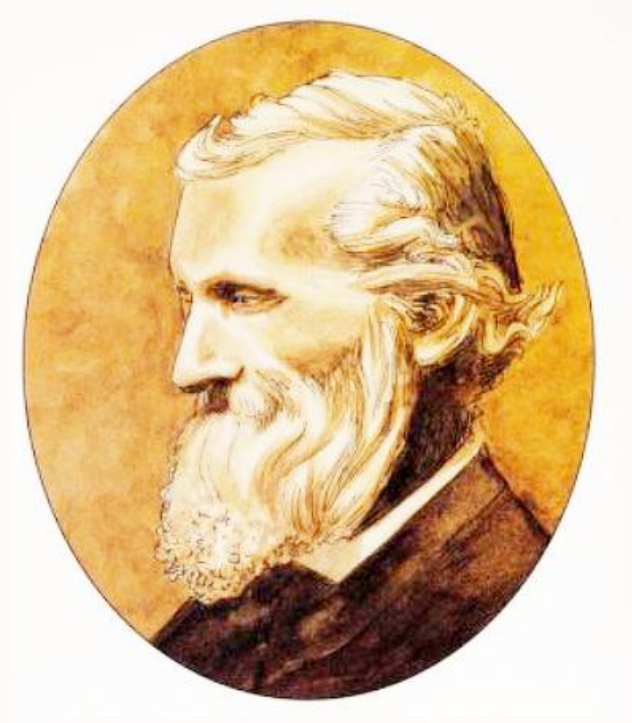

1914 में जॉन मुइर की मृत्यु हो गई. उन्होंने कई खूबसूरत पार्कों को अपने पीछे छोड़ा. कुछ पार्क उनके नाम पर हैं. ये स्थान पहाड़ों, पौधों और जानवरों से भरे हुए हैं. जब हम उन्हें देखते हैं, तो हमें जॉन मुइर की याद आती है. वो ऐसे इंसान थे जो चाहते थे कि हम ज़मीन, पेड़-पौधों, नदियों और पहाड़ों की देखभाल करें. वो चाहते थे कि हम "पहाड़ों को आनन्दित करें."